बैसाखी के त्यौहार को अलौकिक विधि से कैसे मनाए?

बैसाखी का त्यौहार एक मौसमी त्यौहार है। यह सम्पूर्ण भारतवर्ष में मनाया जाता है किन्तु पंजाब एवं हरियाणा में इसका विशेष महत्त्व है। यह त्यौहार सभी धर्मों एवं जातियों के द्वारा मनाया जाता है। बैसाखी मुख्यतः कृषि पर्व है। यह त्यौहार फसल कटाई के आगमन के रूप में मनाया जाता है। बैसाखी को भारत के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है लेकिन इसे मनाने का तरीका लगभग एक जैसा है। इस त्योहार को विभिन्न भारतीय राज्यों में इस नाम से जाना जाता है-

असम में ***रोंगाली बिहू;*** ओडिशा में ***महा विशुव संक्रांति;*** पश्चिम बंगाल और त्रिपुरा में ***पोहेला बोइशाख या नाबा बरशा;*** आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और कर्नाटक में ***उगादी;*** तुलु लोग के बीच में ***बिसु;*** उत्तराखंड के कुमाऊं में ***बिकु या बिकौटी;*** तमिलनाडु में ***पुथांडु;*** केरल में ***विशु ।*** इनमें से कुछ त्यौहार को उसी दिन बैसाखी के रूप में मनाया जाता है जबकि अन्य को एक या दो दिन बाद मनाया जाता है।

बैसाखी मुख्य रूप से कृषि पर्व है जो की हर साल 13 अप्रैल (या कभी-कभी 14 अप्रैल) को मनाया जाता है। पंजाब एवं हरियाणा की उपजाऊ भूमि पर जब चैती फसल पक कर तैयार हो जाती है तब वहाँ का बाँका छैल किसान उस अन्नधन रूपी लक्ष्मी को देख प्रसन्नता से मस्ती में नाच उठता है।

बैसाखी का त्यौहार विशेष रूप से सिख धर्म का भी त्यौहार है, हमारे देश के पंजाब प्रान्त और देश-विदेश के अन्य हिस्सों में रहने वाले सिख समुदाय द्वारा इसे बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता हैं। बैसाखी सिख धर्म के नये वर्ष के शुभारम्भ का दिन हैं, जब सिख धर्म के दसवे गुरु गोविन्द सिंह ने खालसा पंथ की नीव रखी थी। यह दिन सिखों के लिए इसलिए भी खास है क्योंकि इस दिन सिखों के नौवें सिख गुरु, गुरु तेग बहादुर का वध हुआ था, जिन्होंने मुगल बादशाह औरंगजेब के इस्लाम में बदलने के आदेश को अस्वीकार कर दिया था। इसके बाद उनके दसवें गुरु के राज्याभिषेक और खालसा पंथ का गठन हुआ था।

बैसाखी का त्यौहार मनाने के लिए विविध स्थल पर मेला लगता हैं। सामान्य रूप से बैसाखी मेला नदी या नहर अथवा तालाब के किनारे या मंदिर जैसे पवित्र स्थानों पर लगता हैं। बैसाखी पर्व के एक दिन पूर्व यहां बाजार लगता हैं। जिस में मिठाई, चाट, फलों, खिलौनों, कपडे जैसी अनेक चीज वस्तुओं की अनेक दुकानें लगाई जाती हैं। बैसाखी के इस मेले में अनेक नट, जादूगर और बाजीगर भी आ जाते हैं। बैसाखी मेले में लोक-नृत्य का प्रदर्शन भी किया जाता हैं। मेले के एक भाग में बहुत से लोग घेरा बनाकर खड़े दिखाई देते हैं। ये आमतौर पर आस-पास के गाँवों के किसान होते हैं। वे ढोल-नगाडों की तान पर अपने लोक-नृत्यों का प्रदर्शन करते हैं। हाथों

में वे लम्बे-लम्बे डंडे लिये होते हैं, उन्हें हवा में उछाल कर कूदते है और डंडे लपक लेते हैं। नृत्य करने वाले लोग हाथ-पैरों को हवा मे उछाल कर वे जोर-जोर से "बैसाखी आई रे, बैसाखी आई रे" जैसे गीत गाते हैं, सभी नृत्य करने वाले ख़ुशी से झूमते हैं। जिसे देखकर सभी बहुत ही ख़ुश होते है और एक दूसरे को बैसाखी की बधाई देते है। इस के अलावा लोग जूलूस निकालते हैं, पटाखे फोड़ते हैं, अपने करीबि दोस्तों-रिश्तेदारों के लिए दावत का आयोजन करते हैं और पूरे दिन का आनंद लेते हैं। दूसरी ओर अनेक वृद्ध और धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति भक्ति करते है, भजन गाते हैं और धार्मिक प्रवचन भी सुनते हैं। लोग सांसारिक बातों को भूल कर ईश्वर का ध्यान भी करते हैं।

भारत वर्ष का प्रत्येक पर्व आनंद उल्लास के साथ मनाया जाता है लेकिन हर पर्व के पीछे एक गहन आध्यात्मिक रहस्य भी छिपा हुआ होता है। जिसको हम भूलते जा रहे है और त्यौहार को स्थूल रूप से ज्यादा मनाने लगे है। जैसे की सिखों के लिए बैसाखी नए साल का पहला दिन है | इस दिन हम एक दुसरे से मिलकर नए वर्ष की शुभेच्छाएं, शुभ कामनाएं देते है| नए वस्त्र पहनकर गुरुद्वारों में जाते हैं| अपने पसंद के भोजन खाते और खिलाते हैं| भल हम पुरे उमंग उल्लास से नए साल को इस तरह से मनाएं, परन्तु आज जब समस्त विश्व में चारों ओर हम भ्रष्टाचार, दुराचार, पापाचार तथा जीवन मूल्यों का पतन देख रहे हैं तब हमें इस नए साल के पहले दिन, विशेष करके अपने स्वयं के परिवर्तन द्वारा, नए मूल्यनिष्ठ समाज अर्थात नए युग की स्थापना का संकल्प करना चाहिए|

विशेष कर वर्त्तमान समय जब, आज की इस कलियुगी भ्रष्टाचारी दुनिया का परिवर्तन करने के लिए, स्वयं ज्योतिबिंदु परमात्मा शिव, ब्रह्मा के तन का आधार लेकर, नइ सतयुगी दुनिया की स्थापना का कार्य कर रहे हैं, तब हमें इस दिन अपनी कमियों को दूर कर, जीवन के श्रेष्ठ मूल्यों को धारण कर नवयुग की स्थापना के कार्य में सहयोगी बनना चाहिए । नए साल की मुबारक के साथ साथ सब को नवयुग की भी मुबारक देनी चाहिए ।

बैसाखी नई फसल की कटाई का त्यौहार है। हम इस दिन नई फसल की कटाई का आनंद जररू ले । लेकिन इस दिन हमें यह भी सोचना चाहिए की जिवन रूपी धरती पर हम जैसा कर्म रूपी बिज बोते है वैसी ही फल रूपी फसल हम काटते है। तो आज के दिन हमें अपने कर्मो को चेक करना चाहिए और दृढ़ संकल्प करना चाहिए कि हम विकार्मो से दूर रह कर सत्कर्म ही करेंगे ।

ऐसा भी माना जाता है कि बैसाखी के दिन भागीरथ ने गंगा को धरती पर उतारा था । हम सब जानते हैं कि गंगा तो हिमालय के पहाडो में स्थित गंगोत्री से निकलती है और फिर मैदानी विस्तार से बहती हुई सागर से मिलती है । वास्तव में यह बात पानी की स्थूल गंगा तक सिमित नहीं है लेकिन परमात्मा शिव से, ब्रह्मा के तन (भागीरथ) के माध्यम द्वारा, वर्तमान समय जो ज्ञानगंगा बहती है उसकी है । इस आध्यात्मिक रहस्य को समझ कर हमें आज के दिन परमात्मा द्वारा दिए जा रहे ज्ञान और योग की शिक्षा को अपने जीवन में धारण करना चाहिए

वर्त्तमान समय के संदर्भ में ऊपर दिए गए रहस्यों को समझकर हम बैशाखी के पर्व को मनाएंगे तो जरुर एक नए प्रकार के आनंद की अनुभूति के साथ-साथ परमात्मा

द्वारा शुरू किए गए नवयुग की स्थापना के कार्य में सहयोगी बन सकेंगे| आशा है कि इस वर्ष आप इन आध्यात्मिक रहस्यों को समझ कर बैसाखी को मनाएंगे |

------- O ----- O -------

ब्र. कु. प्रफुल्लचंद्र

सानडिएगो; यु एस ए

(M) +91 98258 92710